SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

लोकनाट्य नाचा में साखी परंपरा

मृदुला सिंह, (Ph.D.), हिंदी विभाग,
होलीक्रॉस वीमेंस कॉलेज, अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
मृदुला सिंह, (Ph.D.), हिंदी विभाग,
होलीक्रॉस वीमेंस कॉलेज, अम्बिकापुर,
छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/09/2021
Revised on : -----
Accepted on : 27/09/2021
Plagiarism : 00% on 20/09/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

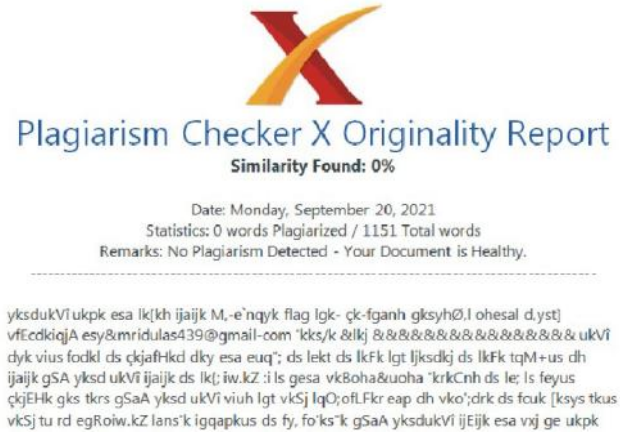

Date: Monday, September 20, 2021
Statistics: 0 words Plagiarized / 1151 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

yksdukVî ukpk esa lk[kh ijaijk M,-e`nqyk flag lgk- çk-fganh gksyhØ.l ohesal d.yst] vfEcdkiqjA esy&mridulas439@gmail-com "kks/k &lkj &&&&&&&&&&&&&&&& ukVî dyk vius fodkl ds çkjafHkd dky esa euq"; ds lekt ds lkFk lgt ljksdkj ds lkFk tqM+us dh ijaijk gSA yksd ukVî ijaijk ds lk{; iw.kZ :i ls gesa vkBoha&uoha "krkCnh ds le; ls feyus çkjEHk gks tkrs gSaA yksd ukVî viuh lgt vkSj lqO;ofLFkr eap dh vko';drk ds fcuk [ksys tkus vkSj tu rd egRoiw.kZ lans"k igqapkus ds fy, fo'ks"k gSaA yksdukVî ijEijk esa vxj ge ukpk

शोध सार

नाट्य कला अपने विकास के प्रारंभिक काल में मनुष्य को समाज के साथ सहज सरोकार के साथ जुड़ने की परंपरा है। लोक नाट्य परंपरा के साक्ष्य पूर्ण रूप से हमें आठवीं–नवीं शताब्दी के समय से मिलने प्रारम्भ हो जाते हैं। लोक नाट्य अपनी सहज और सुव्यवस्थित मंच की आवश्यकता के बिना खेले जाने और जन तक महत्वपूर्ण संदेश पहुंचाने के लिए विशेष हैं। लोकनाट्य परम्परा में अगर हम नाचा की बात करें तो यह लोकजीवन का अत्यंत लोकप्रिय कला रुप है। चार बांसों से बना सामान्य मंच अपने मंचन में विशेष है। नाचा के पूर्व रंगमंच में नचकारिंन के गीत नृत्य के बाद जोक्कड़ों का प्रवेश होता है। जोक्कड़ नाचा, गम्मत के महत्वपूर्ण अंग होते हैं। इनकी कुशल प्रस्तुति से नाचा मंडली प्रसिद्ध होती है। साखी की परंपरा नाचा में खड़े साज से आरम्भ होकर आज भी बैठक में विद्यमान है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य, छत्तीसगढ़ की लोक परंपरा में लोक नाट्य नाचा और उसमें साखी परम्परा की विशेषताओं को रेखांकित किया जाना हैं। ये छत्तीसगढ़ की गौरवशाली ग्रामीण कला –संस्कृति को संरक्षण देने में पूर्णतः सक्षम हैं। अतः यह कहना उचित ही होगा कि लोक नाट्य 'नाचा' में साखी छत्तीसगढ़ के गाँवों की निश्चल जन समूहों के सांस्कृतिक प्रतिनिधि हैं। आधुनिक समाज इन महत्वपूर्ण परम्पराओं से कटता जा रहा है इनका संरक्षण और संज्ञान में आना बहुत आवश्यक है। इन विषयों पर शोध की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द

खानाबदोश, साखी परंपरा, लोकनाट्य, नचकारिंन, जोक्कड़, नचौड़ी.

नाचा, छत्तीसगढ़ की प्रसिद्ध लोक नाट्यकला है। यह एक आकर्षक नाट्यकला विधा है, जहाँ कलाकार

और दर्शक सभी स्थानीय छत्तीसगढ़ी भाषा बोलनेवाले समुदायों से संबंध रखते हैं। इनके कला भंडार में कई परंपरागत और लोक संगीत सम्मिलित हैं जैसे कर्मा, ददारिया, सुआ, सोहर, पंथी, पंडवानी, इत्यादि।

नाचा प्रस्तुतियाँ चार प्रकार की होती हैं, खड़े साज नाचा, जो कि सबसे पुरानी विधा है, गंडवा नाचा जो कि शादियों में गंडवा समुदाय के संगीतकारों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, खानाबदोश देवार समुदाय का देवार नाचा, और बैठे साज या गम्मत नाचा जो कि सर्वाधिक लोकप्रिय है। देवार नाचा विधा को छोड़कर, सभी नाचा विधाओं में महिला पात्रों को पुरुष कलाकारों द्वारा महिला के परिधान में प्रस्तुत किया जाता है। नाचा में कलाकार की भाव भंगिमा को महत्त्व दिया जाता है। नाचा प्रस्तुतियाँ सामान्यतया रात में आयोजित होती हैं।

लोकनाट्य 'नाचा' में हमे साखी देखने को मिलती है।

नाचा छत्तीसगढ़ के लोकजीवन का सर्वाधिक लोकप्रिय कालरूप है। यह अपने आप में एक पूर्ण विधा है।[1]

नाचा का उद्‌भव खड़े साज की गम्मत से हुआ है, जो मराठा छावनियों में सैनिकों के मनोरंजन का साधन हुआ करता था। मराठी के तमाशा एवं छत्तीसगढ़ के नाचा दोनों का ही उद्‌भव मराठा छावनियों की गम्मत से हुआ है।[2]

नाचा रात्रि नौ–दस बजे से शुरु होकर सुबह तक चलता है। चार बांसों से बना साधारण मंच, न कोई तामझाम न कोई सजावट बिना परदे का। सब कुछ सहज और सरल ठीक यहां के लोगों के जीवन की तरह। न दम्भ, न दिखावा न कोई प्रपंच न छलावा। जैसा बाहर वैसा ही भीतर यही तो है विशेषता यहां के भोले–भाले लोगों की और नाचा की। अब तो यहां उक्ति ही चल पड़ी है। ''सबले बढ़िया, छत्तीसगढ़ियां।''[3]

नाचा नाट्य की क्षमता और संभावना का विलक्षण उपयोग हबीब तनवीर ने किया।

छत्तींसगढ़ी गीत गायन में साखी (दोहा) परंपरा हमें फाग गीतों में भी मिलती है। ये साखियां कबीर, तुलसी की साखियों, दोहों से भिन्न नहीं है। कबीर ने मानव मूल्यों की रक्षा के लिए जिन साखियों को रचा। आत्मा परमात्मा के एकाकार के लिए जिन साखियों को गढ़ा। जीवन के आडम्बरों और पाखंडों पर प्रहार के लिए जिन साखियों को अस्त्र के रूप में प्रयुक्त किया, ये सब वही साखियां हैं, वही दोहे। नाचा में रात भर में तीन चार गम्मत प्रस्तुत किये जाते हैं। प्रत्येक गम्मत के पूर्व में इस तरह की साखियां और पहेलियां प्रस्तुत करने की परंपरा है। जीवन व जगत से जुड़ी हुई ये साखियां और पहेलियां जहां लोगों का मनोरंजन करती है, वहीं उनके ज्ञानार्जन में सहायक सिद्ध होती है। लोक के इस प्रयोजन में लोक की अनुभूति ही अभिव्यक्त होती है। नाचा में प्रयुक्त होने वाली साखियों और पहेलियों को अग्रलिखित रूप में विभाजित किया जा सकता है:

1. देवी–देवता संबंधी साखियां,
2. नीति संबंधी साखियां,
3. मानवीय, संबंध–संबंधी साखियां,
4. कृषि संस्कृति संबंधी साखियां,
5. पशु–पक्षी, प्रकृति संबंधी साखियां,
6. द्विअर्थी या यौन प्रतीक संबंधी साखियां,
7. अन्य साखियां।

फाग गीतों में साखी की एक बानगी:

सरारा सुनले मोर कबीर .....
बनबन बाजे बांसुरी, के बनबन नाचे मोर।
बनबन ढूंढे राधिका, कोई देखे नंदकिशोर।।[4]

इस तरह छत्तीसगढ़ी फाग गीतों का गायन साखी के बाद ही प्रारंभ होता है।।

नाचा के पूर्व रंगमंच में नचकारिंन के गीत नृत्य के बाद जोक्कड़ों का प्रवेश होता है। जोक्कड़ नाचा गम्मत के मेरुदंड होते हैं। ये जितने कुशल और प्रवीण होंगे, नाचा मंडली उतनी ही प्रसिद्ध होगी।

जोक्कड़ प्रारम्भ में नचौड़ी नृत्य कर साखी व पहेली के माध्यम से नाचा का माहौल तैयार करते हैं। साखी की परंपरा नाचा के खड़े साज से प्रारम्भ होकर आज भी बैठक साज में विद्यमान है।[5]

जहां तक पहेलियों की बात है, वह तो लोकजीवन में मनोरंजन और ज्ञानरंजन का पर्याय है। पहेली को छत्तीसगढ़ी में 'जनौला' कहा जाता है। यही साखियां, यही पहेलियां नाचा में मनोरंजन का द्वार खोलती है और दर्शकों को ज्ञान– विज्ञान और हास–परिहास में गोते लगवाती है। नाचा के पूर्व रंग का रंग ही अनोखा और चोखा है। यही है नाचा का वह अछूता पक्ष है जिसकी चर्चा नहीं हो पाती। नाचा के जोक्कड़ गीत–गायन, नृत्यक और संवाद अदायगी में बड़े कुशल होते हैं।

वे बात से बात पैदा करने में कुशल होते हैं। कहा जाता है कि– जैसे केरा के पात पात में पात, तइसे जोक्कड़ के बात बात में बात।

एक लोकोक्ति है– पानी पिओ छान के, गुरु बनाओ जानके। लेकिन नाचा कलाकार दूसरा जोक्कड़ कहता है नही, पानी पिओ जान के और गुरु बनाओ छान के। 6

निष्कर्ष

लोक नाट्य नाचा में साखी परंपरा पर लिखते हुये यह बात महत्वपूर्ण है कि लोक नाट्य हमारी लोक संस्कृति का प्रमुख अंग है। यद्यपि आधुनिक समय के प्रभाव से ये भी अब अछूते नहीं रहे, बहुत परिवर्तन हुआ है। किन्तु उनकी महत्ता उनमे रगी–पगी लोक संस्कृति की ग्रामीण आवाज उसकी स्वर लहरी अब भी समाप्त नहीं हुई है, यह समाप्त हो भी नही सकती। किसी ने सही ही कहा है कि– ''लोक वेदों से भी पहले है।'' यह परंपरा कभी समाप्त नहीं होगी।

लोक में ग्रामीण भूमि पर फलती–फूलती लोक संस्कृति गाँव की सामाजिक समस्याओं पर आधारित नाटक, लोक गीत, लोक संगीत तथा सामाजिक विषमताओं पर व्यंग्यात्मक प्रहार करने वाले प्रहसन, हास्य–व्यंग्य से भरपूर गम्मत, छत्तीसगढ़ की गौरवशाली ग्रामीण कला–संस्कृति को संरक्षण देने में पूर्णतः सक्षम हैं। अतः यह कहना उचित ही होगा कि लोक नाट्य 'नाचा' में साखी छत्तीसगढ़ के गाँवों की निश्चल जन समूहों के सांस्कृतिक प्रतिनिधि हैं।

आधुनिक समाज इन महत्वपूर्ण परम्पराओं से कटता जा रहा है। इनका संरक्षण और संज्ञान में आना बहुत आवश्यक है। इन विषयों पर शोध की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. श्रीवास्तव, राजेश, कैलाश, लोक साहित्य, प्रकाशन, पुस्तक सदन, भोपाल,पृष्ठ सं. 107।
2. http://www.aphyakti_hindi.org
3. वही
4. https://aarambha.blogspot.com/2009/11/blog&post_04-html\m¾1
5. श्रीवास्तव, राजेश, कैलाश, लोक साहित्य, प्रकाशन, पुस्तक सदन, भोपाल,पृष्ठ सं. 108
6. वही पृष्ठ सं 109

****